संदेश छः

परमेश्वर के गृह प्रबंध के अनुसार विश्वव्यापक इतिहास- एक नया मनुष्य को वास्तविक्ता में पाने के लिए प्रभु के हृदय की इच्छा पूरा करने लिए मानव इतिहास के अंदर दिव्य इतिहास

शास्त्र अध्ययन: योए. 1:4; इफि. 1:3-6; 2:15; 4:22-24; मिका. 5:2; प्रका. 19:7-9

I. इस विश्व में दो इतिहास हैं: मनुष्य का इतिहास, मानव इतिहास और परमेश्वर का इतिहास, दिव्य इतिहास; पहला वाला बाहरी खोल के समान है और पिछला खोल के अंदर की गिरी है-योएल. 1:4:

A. मानव इतिहास के अंदर दिव्य इतिहास को बाइबल में काफ़ी विस्तार से प्रकट किया गया है; परमेश्वर का इतिहास हमारा इतिहास है क्योंकि वह हमारे साथ जुड़ा है:

1. हमें मनुष्य के साथ जोड़ में उसके गतिमान की तैयारी के रूप में अनंतकाल में परमेश्वर के इतिहास को देखने की जरूरत है:

   a. दिव्य इतिहास अनंत परमेश्वर और उसके गृह प्रबंध से शुरू हुआ; उसके गृह प्रबंध के अनुसार, मनुष्य का जीवन, जीवन आपूर्ति, और सबकुछ होने के लिए और अपनी अभिव्यक्ति के रूप में मनुष्य को पाने के लिए परमेश्वर मनुष्य के साथ एक होने के लिए खुद को मनुष्य में कार्य करना चाहता है-इफि. 3:9-10; 1:10; उत्प. 1:26; 2:9

   b. परमेश्वर ने अपनी दिव्य त्रिएकता में परमेश्वर के गृह प्रबंध के संचालन के लिए मसीह की अत्यंत महत्वपूर्ण मृत्यु संबंधित निर्णय लेने के लिए अनादिकाल में एक समिति रखी-प्रेरितों 2:23

   c. दिव्य त्रिएकता का दूसरा अनादिकाल से समय में बैतलहम में मनुष्य के रूप में जन्म लेने के लिए अपने ''निकलने को'' कार्यान्कित करने की तैयारी कर रहा था-मीका 5:2

   d. परमेश्वर ने मसीह में विश्वासियों को जगत की उत्पत्ति से पूर्व स्वर्गीय स्थानों में आत्मिक आशिषों से आशीषित किया-इफि. 1:3-6

2. परमेश्वर का मनुष्य में इतिहास देहधारण से शुरू हुआ और मानव जीवन, क्रूसीकरण, पुनरुत्थान, और आरोहण की अपनी प्रक्रियाओं से जारी है; होशे 11:4 कहता है कि ये मनुष्य की डोरी, प्रेम के बन्धन हैं:

   a. दिव्य इतिहास, परमेश्वर का मनुष्य में गतिमान, आदिप्ररूप के रूप में प्रक्रिया से गुजरे मसीह, परमेश्वर-मनुष्य के साथ है जो नया यरूशलेम को परिपूर्ण करने के लिए नया मनुष्य, महान परमेश्वर मनुष्य, परमेश्वर के अनंत गृह प्रबंध की अंतिम परिपूर्णता तक है।

   b. मसीह के देहधारण और मानव जीवन द्वारा, उसने असीमित परमेश्वर को सीमित मनुष्य में लाया, त्रिएक परमेश्वर को त्रिभागीय मनुष्य से जोड़ा और मिलाया और उसने उदार परमेश्वर के धनी गुणों को उसके सुगन्धि सद्गुणों के द्वारा अपनी मानवता में अभिव्यक्त किया।

   c. मसीह का क्रूसीकरण एक स्थानापन्न की मृत्यु थी, एक सर्व-सम्मिलित मृत्यु, सर्व-सम्मिलित न्यायिक छुटकारा, जिसने पुरानी सृष्टि को खत्म किया और सारी समस्याओं को हल किया(युहन्ना 1:29); अपने क्रूसीकरण में उसने परमेश्वर रचित और पाप में गिरे(इब्रा. 2:9; कुलु. 1:20) सब चीज़ो को छुड़ाया, उसने नया मनुष्य को अपने दिव्य तत्व से रचा(इफि. 2:15), और उसने दिव्य जीवन को अपनी मानवता के कवच से मुक्त किया(युहन्ना 12:24; 19:34; लूका 12:49-50)

   d. अपने पुनरुत्थान में वह परमेश्वर का पहिलौठा पुत्र होने के लिए जन्मा(प्रेरितों 13:33; रोम. 1:4; 8:29), वह जीवन दायक आत्मा बना(1 कुरि. 15:45) और उसने मसीह की देह के सदस्य और

कलीसिया, एक नया मनुष्य के संघटक के रूप में लाखों लोगों को परमेश्वर के पुत्र होने के लिए नया जन्म दिया(1 पत. 1:3; कुलु. 3:10-11)।

e. वह स्वर्ग तक उठाया गया और त्रिएक परमेश्वर की सामुहिक अभिव्यक्ति के लिए एक नया मनुष्य के रूप में कलीसिया को उत्पन्न करने के लिए आत्मा के रूप में उतरा-योए. 2:28-32; प्रेरि. 2:1-4, 16-21

B. अत:, कलीसिया एक नया मनुष्य की वास्तविक्ता के रूप में दिव्य इतिहास का भी भाग है, बाहरी मानव इतिहास के अंदर अंदरूपी इतिहास का दिव्य रहस्य, दिव्य इतिहास के इस भाग के अंत पर, मसीह अपनी सेना के रूप में अपने जयवन्तों के साथ(योए. 1:4; 3:11) मसीह विरोधी और उसकी सेना को हराने के लिए आएगा।

C. इसके बाद, एक हज़ार वर्ष का राज्य आएगा; अंत में यह राज्य नया यरूशलेम में नया आकाश और नयी पृथ्वी में परिपूर्ण होगा; नया यरूशलेम परमेश्वर के इतिहास का आखीरी, समापन का कदम होगा।

II. **पतरस(मछली पकड़ने की सेवकाई), पौलुस(निर्माण की सेवकाई) और युहन्ना(सुधार की सेवकाई) के साथ, हम प्रभु का एक नया मनुष्य पाने की हृदय की इच्छा को देखते हैं:**

A. परमेश्वर ने पतरस को पिनतेकुस्त के दिन कई यहूदी विश्वासियों को लाने के लिए इस्तेमाल किया(प्रेरितो. 2:5-11); इसके अलावा, कुरनेलियुस ने प्रार्थना में दर्शन प्राप्त किया(10:30), और पतरस ने भी प्रार्थना में दर्शन प्राप्त किया(आ. 17, 19), जिसके द्वारा परमेश्वर एक नया मनुष्य के व्यवहारिक अस्तित्व को लाने के लिए अन्यजातियों को पाने के लिए योजना बनाता है और चलता है।

B. पौलुस ने इफिसियों 2:14-5 में प्रकट किया कि मसीह ने अपने नया -मनुष्य-रचने वाली मृत्यु द्वारा यहूदी और गैरयहूदी दोनों को एक नया मनुष्य में रचा(4:22-24); पौलुस 1 कुरिन्थियों 12:13 में हमें बताता है कि हम सभी ''चाहे यहूदी या युनानी'' ने एक देह में बपतिस्मा लिया है; गलातियों 3:27-28 में पौलुस हमें बताता है कि जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है, और ''न कोई यहूदी है ना युनानी'', कुलुस्सियों 3:10-11 में पौलुस हमें बताता है कि यहूदी और युनानी का एक नया मनुष्य में कोई स्थान नहीं है।

C. युहन्ना हमें बताता है कि प्रभु ने अपने लहू से ''प्रत्येक कुल, भाषा, लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल ले लिया है''(प्रका. 5:9); ये छुड़ाये गये जन कलीसिया को एक नया मनुष्य के रूप में बनाते हैं; युहन्ना के द्वारा हम यह भी देखते हैं कि कलीसियाएं स्वर्ण दीवट हैं(1:11-12), और अंत में ये दीवट नया यरूशलेम बन जायेंगे; दीवटों में और नया यरूशलेम में हम कोई अंतर नहीं दे सकते हैं।

D. यह सब सूचित करता है कि प्रतिदिन हमें एक आत्मा को पीने के द्वारा पुराने मनुष्य को उतारने और नये मनुष्य को पहिनने की जरूरत है(1 कुरि. 12:13) ताकि वास्तविक्ता में एक नया मनुष्य को पाने की प्रभु के हृदय की इच्छा पूरी करने के लिए हम अपने मन की आत्मा में, अपने व्यवहारिक दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में नये बन सके(इफि. 4:22-24)

III. **दिव्य इतिहास के साथ नयी सृष्टि है-नया हृदय, नयी आत्मा, नया जीवन, नया स्वभाव, नया इतिहास और नयी परिपूर्णता के साथ नया मनुष्य है-यहेज. 36:26; 2 कुरि. 3:16; मत्ती. 5:8; तितु. 3:5:**

A. दिव्य इतिहास, मनुष्य में परमेश्वर का इतिहास मसीह के देहधारण से उसके आरोहण तक जीवन दायक आत्मा बनने के लिए था, और फिर हमें नया मनुष्य की पूर्ण वास्तविक्ता में लाने के लिए और हमें मसीह की महिमामय दुल्हन बनाने के लिए उसका हमारे अंदर निवास करने के द्वारा परमेश्वर के जैविक उद्धार का नया जन्म,

पवित्रिकरण, नवीनीकरण, रूपांतरण, अनुरूपीकरण और महिमाकरण तक जारी है-इफि. 4:22-24; रोम. 5:10; प्रका. 19:7-9

B. अब हमें अपने आप से यह सवाल पूछना है: क्या हम दिव्य इतिहास में जी रहे हैं, या हम मात्र मानवीय इतिहास में जी रहे हैं?

1. हम सभी मानवीय इतिहास में जन्में थें, लेकिन हम ने दिव्य इतिहास में दोबारा जन्म, नया जन्म लिया है; यदि हमारा जीना इस संसार में है, तो हम मानवीय इतिहास में जी रहे हैं; लेकिन यदि हम एक नया मनुष्य की वास्तविक्ता के रूप में कलीसिया में जी रहे हैं, तो हम दिव्य इतिहास में जी रहे हैं; कलीसिया जीवन में परमेश्वर का इतिहास हमारा इतिहास है; अब दो दल-परमेश्वर और हमारा-एक इतिहास है, दिव्य इतिहास।

2. हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं कि हम दिव्य इतिहास में है, अपने जैविक उद्धार के लिए और शांति के सुसमाचार के द्वारा उसका पूरी दुनिया में फैलने के लिए रहस्यमय, दिव्य चीज़ो को आनंद और अनुभव कर रहे हैं(इफि. 2:14-17; 6:15; मत्ती. 24:14) ताकि हम उसकी जयवन्त दुल्हन बनने के लिए वास्तविक्ता में एक नया मनुष्य बन सकें।

© 2020 Living Stream Ministry